पाठ - 5
कलिमए शहादत का अर्थ

الدرس الخامس - هندي
معني لا إ له إلا الله

कलिमए तौहीद''ला इलाह इल्लल्लाह दीन की बुनियाद है इसे दीने इस्लाम में अत्यधिक महत्व दिया गया है। यह इस्लाम का पहला आधार है। इसी कलिमाके बुनियाद पर सारे आमाल स्वीकार होते हैं। इसे जुबान से अदा करना, इसके अर्थों और आवश्यक्ताओं को समझना और उसी के अनुसार कर्म करना ज़रूरी है। इस कलिमा का सही भावार्थ यह है कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा उपास्य नहीं है। इस कलिमा की मांग है कि हम केवल और केवल अल्लाह ही की इबादत करें और उसके सिवा किसी और की इबादत न करें। इसका भाव यह बताता है कि अल्लाह के सिवा कोई सृष्टिकर्ता या रचयता नहीं है। यह कहना ग़लत है कि अल्लाह के सिवा कोई और कुछ शक्ति रखता है या किसी चीज़ को बदल सकता है।

इस कलिमा के दो प्रमुख अंश हैं **1.** पहला अंश नकारात्मक है। ''ला इलाहा यानी नहीं है कोई माबूद। इसमें हर चीज़ से उलूहियत यानी पूज्य का इन्कार किया गया है। **2.** दूसरा अंश सकारात्मक है। ''इल्लल्लाह मगर अल्लाह। इस अंश में उपासना के अधिकार को केवल अल्लाह के लिए साबित किया गया है, जिसमें उसका कोई भागीदार नहीं है । केवल अल्लाह की ही इबादत की जाए और किसी भी तरह की इबादत अल्लाह के सिवा किसी दूसरे के लिए न की जाए। जिस किसी ने इस कलिमा के भाव को समझा और उसके तक़ाज़ों को पूरा करते हुए अमल करने की कोशिश की यानी शिर्क को नकारा, अल्लाह के एक होने का इक़रार किया और इस कलिमा को व्यापक अर्थों में स्वीकार किया वह वास्तविक अर्थों में मुसलमान हो गया। जो व्यक्ति भरोसे और विश्वास के बग़ैर केवल कर्म करेगा, वह मुनाफ़िक़ होगा। और जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक करेगा वह मुशरिक और काफ़िर होगा। चाहे जितनी बार वह अपनी जुबान से इस कलिमा को अदा करता रहे।

कलिमए तौहीद ''लाइलाहा इल्लल्लाह की श्रेष्ठता : इस कलिमा की अनेक श्रेष्ठता, फ़ज़ीलतें और फ़ायदे हैं। उनमें से कुछ फ़ज़ीलतें ये हैं। कलिमए–तौहीद पर यक़ीन करने वाला यानी मुस्लिम में से यदि कोई जहन्नम में जायेगा भी तो इस कलिमे की बरकत से वह जहन्नम से निकाल लिया जायेगा। अल्लाह पर ईमान रखने वाला हमेशा–हमेश के लिए जहन्नम में नहीं रह सकता। हदीस में आया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया
जिस किसी ने ''ला इलाहा इल्लल्लाह कहा होगा, और उसके दिल में जौ के बराबर भी भलाई होगी, उसे जहन्नम से निकाला जायेगा। जिसने ''लाइलाहा इल्लल्लाह को पढ़ा होगा और उसके दिल में तिन्के के बराबर भी भलाई होगी तो वह जहन्नम से निकाल दिया जाएगा। जिसने ''लाइलाहा इल्लल्लाह को पढ़ा होगा और उसके दिल में कण के बराबर भी ईमान होगा तो वह भी जहन्नम से निकाल दिया जाएगा। (मुत्तफ़क़ अलैह)
इंसानों और जिन्नातों की सृष्टि का वास्तविक उद्देश्य यही है। अल्लाह फ़रमाता है: यानी, मैने इंसानों और जिन्नातों को केवल और केवल इस लिए पैदा किया कि वे मेरी इबादत करें। (सूरह अल ज़ारियात, आयत–56) कुरआन की इस आयत का अर्थ यह है कि लोग अल्लाहको एक मानें और सिर्फ उसी की इबादत करें। इसी कलिम–ए–तौहीद के उद्देश्य को पूरा करने के लिए रसूलों को भेजा गया और आसमानी किताबों ग्रन्थों को अवतरित किया गया। अल्लाह तआला फ़रमाता है यानी, आपसे पहले भी हमने जो रसूल भेजे उनकी तरफ यही वह्य नाज़िल फ़रमायी कि मेरे सिवा कोई सत्य उपास्य नहीं। अतः तुम सब मेरी ही इबादत करो। (सूरह अलअंबिया, आयत–25)
4. रसूलों ने अपनी दावत की शुरुआत इसी कलिमे से की। सबसे पहले इसी कलिम–ए–तौहीद की दावत दी। प्रत्येक रसूल ने अपनी अपनी क़ौम से कहा यानी,ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई दूसरा सत्य उपास्य (पूज्य) नहीं है।